औषधीय पौधों के संबर्धन क्षेत्र में **कृष्णा प्रसाद** का 25 वर्षों का सफर

सफलता की कहानी से परे

अपने जीवन में शुरू से ही कुछ अलग करने की सोच के साथ कृष्णा प्रसाद अपने कॉलेज की षिक्षा पूरा करने के साथ ही औषधीय एवं सुगंधित पौधा के क्षेत्र में अभियान की शुरूआत करने हेतु 1996 में उधमिता विकास संस्थान, पटना तथा 1997 में एफ.एफ.डी.सी., कन्नौज द्वारा इसका विधिवत प्रषिक्षण लेकर इसमें लग गए। प्रषिक्षण के दौरान ही उनकी मुलाकात बिहार में औषधीय एवं सुगंधित पौधो की खेती के जनक कहे जाने वाले श्री एन.के.राय तथा बैधनाथ आयुर्वेद पटना के डा. विरेन्द्र सिंह से हुई। इन लोगों के मार्गदर्षन में योजना को आगे बढाने की तैयारी होने लगी। उस समय श्री एन के राय पष्चिमी चम्पारण के अपने फार्म पर विभिन्न तरह के औषधीय एवं सुगंधित पौधो की खेती एवं उनसे तेल निकालने का कार्य कर रहे थे। उस समय की एक घटना का संस्मरण कर कृष्णा प्रसाद ने बतलाया कि उन्होंने श्री एन.के. राय जी द्वारा उनके फार्म का दिए गए पते पर जा कर उनकी खेती एवं अन्य गतिविधियों को देखने की योजना बनाई। सन् 1997 में मई का महिना था उस समय न तो मोबाईल और न संचार की अन्य सुविधा थी और ना ही आवागवन की उतना साधन था। किसी प्रकार नरकटियागंज तक ट्रेन द्वारा पहूँच कर आगे जाने की योजना बनाई तब तक शाम हो चूकी थी। उनका फार्म नेपाल बॉडर से सटा डमरापुर पष्चिमी चम्पारण में था।

पता करने पर पता चला कि वहाँ तक जाने का कोई साधन नहीं है किसी तरह कुछ स्थानिय लोगों से टैक्टर एवं टेम्पों का सहयोग लेकर थोड़ा आगे बढ़ा पर एक स्थान पर आकर लोगों ने कहा कि इससे आगे जाने का इस समय कोई भी साधन नहीं मिलेगा। वहाँ से एन.के. राय जी के फार्म की दूरी लगभग 20कि.मी. था। अंधेरा हो चूका था और कच्ची रास्ते थे, उस समय कोई दूसरा विकल्प नही होने पर वहाँ से पैदल चलने का निर्णय किया, दूर–दूर तक कोई रास्ता बतलाने वाला भी नहीं था किसी प्रकार टेढ़े–मेढ़े रास्ते पर आगे बढ़ते हुए बिच–बिच में गॉव आने पर पूछते हुए देर रात को ए.के.राय जी के फार्म पर पहूँचे। उस समय बिहार में खासकर चम्पारण में अपहरण एवं अराजकता का दौर था, अचानक रात में बिना कोई पूर्व सुचना के फार्म पर एक अनजान व्यक्ति के पहूँचने पर वहाँ के लोग घबरा गए। उस समय वहाँ पर मेंथा तेल का ऑसवन का काम चल रहा था। जब परिचय दिया गया और एन.के.राय जी से मुलाकात हुई तो वे भी आष्चर्य चकित हुए। अगले दिन फार्म घुमने के बाद जब बात–चीत हुई तो एन.के. राय जी ने कहा कि औषधीय एवं सुगंधित पौधा में तुम्हारे जुनुन को देखते हुए मैं अपने साथ मिलकर इस क्षेत्र में काम करने का प्रस्ताव देता हूँ। इस तरह साथ मिलकर काम की शुरूआत हो गई। चम्पारण फार्म पर लगभग 3 वर्षो तक फुल टाइम रह कर काम किया उस दौरान विभिन्न औषधीय एवं सुगंधित फसलों की खेती आसवन तथा उनसे सम्बंधित सभी बारिकियों का व्यवहारिक अनुभव प्राप्त किया।

चूँकि शुरू से ही सोच बड़ी थी और कुछ व्यापक और अलग करने की योजना थी। उनके अनुसार इस औषधीय योजना को बड़े क्षेत्र में और ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहूँचे उसके लिए उसका मॉडल और प्रदर्षन फार्म ऐसे स्थान पर होना चाहिए, जहाँ ज्यादा से ज्यादा लोग आकर देख सके और वहाँ से सिख कर अपने यहाँ खेती कर सके। इसी सोच को ध्यान में रखकर कृष्णा प्रसाद सन् 2000 में मुजफ्फरपुर जिले के ढ़ोडी आनन्दकर, फकुली में 5 एकड़ जमीन लीज पर लेकर एक नए मॉडल फार्म की शुरूआत की। वहाँ पर विभिन्न प्रकार के औषधीय एवं सुगंधित फसलो को लगाया गया और एक ऑसवन सयंत्र की स्थापना की गई। वहाँ के आसपास के किसानो को प्रेरित कर नवजागृती किसान क्लब नाम से एक समूह का गठन किया गया और उन लोगों को भी बड़े स्तर पर विभिन्न औषधीय एवं सुगंधित फसलों की खेती कराया। यही से औषधीय एवं सुगंधित पौधा के क्षेत्र में बिहार में सामूहिक और व्यापक विकास का द्वौर शुरू हुआ। बिहार के विभिन्न जिले एवं अन्य राज्यों के किसान एवं उधमी इस मॉडल फार्म पर आने लगे और यहाँ से प्रषिक्षण, बीज–पौधा, एवं अन्य जानकारिया लेकर अपने–अपने क्षेत्र में इसकी खेती करने लगे। उसी दौरान इंडियन मेडिकल ट्रस्ट तथा आयुर्वेद कॉलेज पटना से सम्बद्ध डा० दिनेष्वर प्रसाद से सर्म्पक हुआ और उनके साथ मिलकर राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय सेमिनार, प्रषिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से बिहार के साथ अन्य राज्यों में भी औषधीय एवं सुगंधित पौधो की खेती एवं प्रचार–प्रसार को एक विषेष मुकाम तक पहूँचाया। उसी अभियान के दौरान देष के विभिन्न राज्यों के दौरे के दौरान सन् 2000 में अपने म.प्र. दौरे के दौरान उधमिता विकास संस्थान(सेडमैप) भोपाल म.प्र. में डा. गुरपाल सिंह जरयाल से मुलकात हुई और उनसे काफी कुछ सिखने को मिला। उस समय से लेकर आज तक लगातार उनका इस क्षेत्र में सहयोग एवं मार्गदषन मिल रहा है।

बिहार में औषधीय एवं सुगंधित पौधो की खेती एवं व्यवसाय के क्षेत्र में बेहतर, समयक और सतत् विकास हो इसके लिए पूरे कृष्णा प्रसाद ने बिहार के औषधीय एवं सुगंधित पौधो की खेती करने वाले किसानो, उधमीयों तथा इसके विकास मे लगे व्यक्तियो एवं संस्थाओं को मिलाकर सन् 2006 में औषधीय एवं सुगंधित पौधो उत्पादक संघ बिहार का गठन किया गया।

औषधीय एवं सुगंधित पौधा उत्पादक संघ बिहार तथा देष के अन्य राज्यों के औषधीय एवं सुगंधित पौधा के अभियान से जुड़े विभिन्न संस्थाओं जैसे :–

उधमिता विकास संस्थान, पटना, लघु उधोग सेवा संस्थान, पटना, लघु उधोग सेवा संस्थान, मुजफ्फरपुर राजेन्द्र कृषि विष्वविधालय पूसा, समस्तीपुर,आत्मा, पटना बिहार इण्डस्ट्रिज एसोसिऐषन, पटना, मिथिलांचल इण डस्ट्रिज चेम्बर आफ कॉमर्स, दरभंगा, बिहार राज्य बागबानी मिषन कृर्षि विभाग, NHB, नाबार्ड, बैधनाथ आयुर्वेद, पटना, आयुर्वेद कॉलेज, पटना, तिब्बी कॉलेज, पटना, कृर्षि विज्ञान केन्द्र, दूरदर्षन केन्द्र, पटना, सैडमैप (उधमिता विकास संस्थान) भोपाल, G.K.VK. बैगलोर सिमैप लखनऊ, RCFC-ER, कोलकत्ता।

एवं अन्य संस्थाओं, व्यक्तियों के साथ मिलकर समय–समय विभिन्न माध्यमो एवं योजनाओं के तहत प्रषिक्षण, जागरूकता काय र्क्रम, तकनिकि एवं आर्थिक सहयोग द्वारा विभिन्न क्षेत्रो के किसानो एवं उधमीयों को प्रेरित कर अलग–अलग क्षेत्र में काफी बड़े क्षेत्रो में **सर्पगंधा, कालमेघ, मुष्कदाना, बच, पिप्पली, आर्टिमिसिया, हल्दी, तुलसी, सदाबहार, एलोवेरा, मेंथा, पिपरेटा, लेमनग्रास, खस, सिट्रोनेला एरोमेटिक तुलसी** इत्यादि फसलो की खेती कराने का कार्य किया। सुनिष्चित बाजार तथा बेहतर लाभ के लिए कई औषधीय एवं सुगंधित फसलों के खरीदार कम्पनी तथा संघ के बीच अनुबंध के तहत कॉट्रैक्ट फार्मिग कराया गया और आज भी कई फसलों की कॉट्रैक्ट फार्मिग हो रही है। कृष्णा प्रसाद के प्रयासों से इस सम्बंध में जागरूकता इतनी बढ़ गई है कि इन फसलो का रकबा और उत्पादन काफी बढ़ गया है कुछ फसलो में खासकर मेथा और खस के उत्पादन में देष में उ.प्र. के बाद बिहार दुसरे स्थान पर आ गया है। इस का परिणाम है कि इसके व्यवसाय से सम्बंधित कई कम्पनीओं ने कुछ तो स्थायी तथा कुछ फसल उत्पादन के समय अपना क्रय केन्द्र खोल रखे है। आज लगभग 15 से 20 हजार किसान एवं उधमी परिवार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इससे संबंधित रोजगार से जुडे है और दिनों दिन इसका दायरा बढ़ता जा रहा है। इस सम्बंध में औषधीय एवं सुगंधीत पौधा के क्षेत्र में देष की अग्रनी संस्था सिमैप, लखणऊ के साथ मिलकर बिहार और झारखण्ड में इस सेक्टर को आगे बढ़ाने के लिए प्रषिक्षण किसान मेला, फिल्ड ट्रॉयल, अनुसंधान, सर्वे, उन्नत बीज एवं पौधा वितरण, ऑसवन संयंत्र तथा माक्रेटिंग सम्बंधित तमाम तरह की सुविधाए किसानो को उपलब्ध कराया जा रहा है।

बिहार के विभिन्न संस्थाओं एवं औषधीय क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के साथ मिलकर देष के तत्कालिन केन्द्रिय स्वास्थ मंत्री डा. सी.पी. ठाकुर जी के साथ संवाद स्थापित कर औषधीय सेक्टर के सतत विकास के लिए भारत सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय औषधीय पादप बोडे के गठन में कृष्णा प्रसाद ने अग्रनी भूमिका निभाई, साथ ही बिहार में राज्य औषधीय पादप बोर्ड के साथ मिलकर तब से लेकर आज तक इस क्षेत्र को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे है।

औषधीय पौधों के संग्रह एवं संर्वधन में अपने विषेष रूचि के कारण कृष्णा प्रसाद ने अपने औषधीय पौधो के संग्रह को विषेष रूप देने के लिए सन् 2009 में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के आंषिक सहयोग से प्लप्डै पटना प्रांगन में लगभग ढ़ाई एकड़ क्षेत्र में एक हर्बल गार्डेन की स्थापना की अपने अथक प्रयास से स्थानीय तथा देष के कोने–कोने से लाकर सामान्य से लेकर दुर्लभ जड़ी बुटियो का इस हर्बल गार्डेन में संग्रह किया। आज इस हर्बल गार्डेन में लगभग 350 प्रजाति के औषधीय पौधों का संग्रह है, जो राज्य में अपने तरह का अनोखा और अकेला है। पिछले कई वर्षो से यह हर्बल गार्डेन राज्य में आयुष क्षेत्र से जुड़े तिब्बी कॉलेज, आयुर्वेद कॉलेज एवं अन्य संस्थाओं के लिए षिक्षण, प्रषिक्षण, संबर्धन एवं रिर्सच के लिए उपयोगी औषधीय पौधो के जीन बैंक के रूप में सेवा दे रहा है। इस हर्बल गार्डेन का कोई व्यवसायिक स्वरूप नहीं होने और संसाधन की कमी के कारण इसके रख रखव में काफी परेषानीओ का सामना करना पड़ा। तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी पिछले 11 वर्षो से इस हर्बल गार्डेन को कृष्णा प्रसाद द्वारा संरक्षित एवं सुरक्षित रख आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है।

हाल के वर्षों से जब राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली के अन्तर्गत क्षेत्रिय केन्द्र की स्थापना हुइ तो पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रिय केन्द्र RCFC-ER, कोलकत्ता के साथ मिलकर कृष्णा प्रसाद ने इस सेक्टर को आगे और भी बेहतर ढंग से बढ़ाने के लिए बिहार और झारखण्ड में किसानों, उद्यमियों तथा अन्य लोगों के बीच कई प्रषिक्षण, जागरूकता अभियान बीज–पौधा वितरण तथा माक्रेटिंग से सम्बंधित कार्यक्रम एवं अभियान चलाया जा रहा है। इस सम्बंध में संघ के माध्यम से RCFC-ER से फच्ड एवं अन्य रूप से किसानों को आर्थिक मदद एवं अन्य सहयोग प्राप्त हो रहाा हैं। इसी का परिणाम है कि बिहार और झारखण्ड में यह सेक्टर और भी तेजी से बढ रहा है। औषधीय पौधा संर्वधन अभियान के इस लम्बे दौर में कृष्णा प्रसाद को कई छोटे बड़े परेषानीयों का भी सामना करना पड़ा। कई बार बड़े आर्थिक नुकसान तथा गम्भीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। परन्तु अपने जुनुन तथा इस सेक्टर के लिए कुछ करने की तम्मना तथा औषधीय पौधे के संर्वधन के लिए समर्पित अपने जीवन के मूल मंत्र के कारण कभी हार नहीं मानी।

क्षेत्रीय सह सुविधा केंद्र (आरसीएफसी)
पूर्वी क्षेत्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड (एनएमपीबी)
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
यादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत

For more information please contact:

Prof. (Dr.) Asis Mazumdar
Nodal Coordinator
coordinatorrcfc@jadavpuruniversity.in

Dr. Sanjay Bala
Regional Director
rdrcfc@jadavpuruniversity.in

Tel: +91-33-24146979, Fax: +91-33-24146886
Email: rcfcnmpb@jadavpuruniversity.in, Website : http://www.rcfceast.org